

राजपूतों का महत्व

राजपूतों के महत्व का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि राजपूत मुस्लिम आक्रमण से हिंदू धर्म और संस्कृति के मुख्य रक्षक थे। विपरीत परिस्थितियों के समय राजपूतों की वीरता और साहस ने पीढ़ी को प्रेरित किया और आज भी प्रेरणादायक है। वे महान योद्धा थे और उन्होंने अपने परिवार, कबीले और अपने क्षेत्रीय नेताओं के सम्मान के लिए अपना जीवन लगा दिया।

राजपूत महिलाओं को समाज में काफी स्वतंत्रता और सम्मान प्राप्त था। वे अपनी पवित्रता और पति के प्रति समर्पण के लिए जाने जाते थे। उन्होंने अपना सम्मान बचाने के लिए गौरव के साथ जौहर कर लिया।

महत्वपूर्ण राजपूत राज्य

राज्य	अवधि.	राजधानी	संस्थापक
चौहान/चाहमान	700 – 1192 ई।	दिल्ली	वासुदेव
प्रतिहार/परिहार	730 - 1036 ई	अवन्ती,कन्नौज।	नागभट्ट प्रथम
पँवार/परमार	790- 1150 ई	उज्जैन,	सीक द्वितीय 'श्री हर्ष
चौउक्या/सोलंकी	942 - 1187 ई।	अनिहिलवाड	मूलराज प्रथम
राष्ट्रकुट वर्मन द्वितीय)	752 – 973	ईमालखंड/मान्यखेता	दन्तिदुर्ग (दंती
कल्चुरी/हैहया	850 – 1211 ई।	त्रिपुरी	कोक्कला आई
गढ़वाल/राठौर	1090 - 1194 ई	कन्नौज	चंद्रदेव
तोमर	700 - 1200.	ढिल्लिका	-

गुहिलोटा/सिसोदिया 800 – 1930 ई चित्तौड़ बप्पा रावल, हम्मीर प्रथम

प्रख्यात जैन विद्वान हेमचन्द्र (1089-1172) को सोलंकी राजा जयसिंहा सिद्धराज के काल में प्रसिद्धि मिली। हालाँकि, उन्होंने अपने उत्तराधिकारी कुमारपाल के दरबार को एक सलाहकार के रूप में सुशोभित किया।

सबसे महान प्रतिहार राजा मिहिरभोज (836-885 ई.) था।

अजमेर के शासक पृथ्वीराज-द्वितीय को आमतौर पर पृथ्वीराज चौहान के नाम से जाना जाता था।

हम्मीर महाकाव्य के अनुसार , चौहान सूर्य के पुत्र 'चाहमान' के पूर्वजों के वंशज थे।

आल्हा-उदल का संबंध महोबा से था । वे चंदेल राजा परमारदेव (1165-1203 ई.) के सेनापति थे जिनकी मृत्यु पृथ्वीराज चौहान के साथ युद्ध के दौरान हुई थी।

अनंगपाल तोमर राजपूत (तोमर राजवंश), जो मूल रूप से गुर्जर-प्रतिहारों के सामंत थे, ने 736 ईस्वी में ढिल्लिका (आधुनिक दिल्ली) शहर की स्थापना की।

धंगदेव , जिन्हें धंग के नाम से भी जाना जाता है, जेजाकभुक्ति के चंदेल वंश के राजा थे। उनके शासनकाल में खजुराहो-विश्वनाथ और पार्श्वनाथ के दो भव्य मंदिर बनाए गए। उन्होंने 999 ई. में कंदरिया महादेव मंदिर का निर्माण कराया।

जेजाकभुक्ति बुन्देलखण्ड का प्राचीन नाम था।

गोविंदा चंद्र गढ़वाल की रानी कुमारदेवी बौद्ध थीं। उन्होंने सारनाथ में धर्म

चक्र जैन विहार का निर्माण कराया।